आरती श्री अम्बा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ।।
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को ।
उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै ।
रक्तपुष्प गल माला कंठन पर साजै ।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर- नर- मुनिजन सेवत, तिनके दुखहारी ।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ।।
शुम्भ-निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती ।।
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।।
ब्रह्माणी, रूद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।।
चौंसट योगिन मंगल गावत, नृत्य करत भैरुं ।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरु ।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पति करता ।।
भुजा चार अति शोभित, वरमुद्रा धारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ।।
श्री अम्बेजी की आरती जो कोइ नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पत्ति पावे ।।

।। श्री अम्बे - स्तुति ।।

या श्री स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जां ,
तां त्वां नतास्मि परिपालय देवि विश्वम् ।।
देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद ,
प्रसीद मातर्जगतऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं ,
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ।।

विवरण

ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश भगवान जिनका प्रतिदिन ध्यान करते हैं, ऐसे श्री अम्बा जी की आरती है । आपकी मांग में सिन्दूर की लाली चमकती रहती है, आपके सुन्दर दो नेत्र हैं तथा चन्द्रमा के समान आपका बदन शोभित होता है ।

आपका शरीर सोने के समान चमक रहा है लाल वस्त्र से इनके बदन की शोभा और भी अनुपम हो गई, ऐसे श्री अम्बा जी के गले में लाल फूलों की माला शोभित हो रही है । आप बाघ की सवारी पर विराजित रहती हैं तथा अपने हाथों पे खड़ग एवं खप्पर धारण किये रहती हैं ।

देवता, मनुष्य एवं मुनिलोग, जो भी आपकी सेवा करते हैं, उनके दुःखों का आप निवारण करती हैं । आपके कानों में कुण्डल एवं नाक में मोतियों की नथ बड़े ही अनुपम ढंग से शोभित होता है । शुम्भ-निशुम्भ तथा महिषासुर नामक राक्षसों का आपने संहार किया है।

धूम्र वर्ण की आपकी दोनों आँखे लगता है कि मद से भरी हुई हैं, अर्थात् हमेशा इनकी आँखे नशीली लगती हैं । चण्ड-मुण्ड नामक राक्षसों का नाश करके इस धरती का भार आपने हल्का किया तथा मधु-कैटभ नामक राक्षसों को मारकर देवताओं को भय रहित कर दिया ।

श्री अम्बा जी आप सौम्य रूप भी धारण करने वाली है तथा रौद्र रूप भी

धारण करने वाली हैं एवं फूलों की रानी के समान कोमल हृदय वाली भी है । आने वाले एवं बीते हुए समय को आप बताने वाली हैं तथा माता सरस्वती व लक्ष्मी के साथ आप भगवान शिव की पत्नी भी हैं ।

चौसठ योगिनी आपका मंगल गान गा रही हैं तथा भैरव नृत्य कर रहे हैं, ताल मृदंग एवं डमरु भी बजाये जा रहे हैं । श्री अम्बा जी आप सम्पूर्ण संसार की माता हैं एवं सबका भरण-पोषण भी करने वाली हैं तथा अपने भक्तों के दु:खों का अन्त करने वाली हैं और सब प्रकार सुख एवं ऐश्वर्य को देने वाली हैं । आपकी चार भुजाएँ ही अनुपम ढंग से शोभित होती है तथा मुद्रा (पैसा) की माला भी धारण करने वाली हैं ।

सभी स्त्री एवं पुरुष आपकी पूजा-सेवन करके अपने मन के अनुसार फल प्राप्त करते हैं । अनेक रत्नों से जड़ित सोने की थाल में अगर बत्ती कर्पूर एवं घी का दीपक जलाकर आपकी आरती हो रही है । शिवानन्द स्वामी कहते हैं कि जो भी श्री अम्बा जी की आरती को प्रेमपूर्वक गाता है, वो सुख एवं सम्पत्ति पाने का अधिकारी होता है ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.